

माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता और अभिवृत्ति: सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टिकोण से तुलना

विनीता कुमारी मित्तल¹, डॉ अंतिमबाला पांडेय²

¹शोधार्थी सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय उज्जैन,

²प्रोफेसर, प्रशांति कॉलेज ऑफ एजुकेशन उज्जैन

सारांश (Abstract)

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट वैश्विक स्तर पर मानव जीवन, जैव विविधता तथा प्राकृतिक संसाधनों के लिए गंभीर चुनौती बनकर उभरा है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण, जल संकट तथा जैव विविधता में गिरावट जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान केवल तकनीकी उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज में पर्यावरणीय चेतना और उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी आवश्यक है। इस संदर्भ में शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है तथा शिक्षक इस प्रक्रिया के प्रमुख संवाहक होते हैं। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के शिक्षक विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, व्यवहार तथा मूल्यों को प्रभावित करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का सांस्कृतिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों तथा भौगोलिक क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों के बीच पर्यावरणीय ज्ञान, संवेदनशीलता एवं व्यवहार में किस प्रकार के अंतर पाए जाते हैं। शोध का आधार यह मान्यता है कि सामाजिक परंपराएँ, सांस्कृतिक मूल्य, स्थानीय पर्यावरणीय परिस्थितियाँ तथा जीवनशैली शिक्षकों की पर्यावरणीय सोच को प्रभावित करती हैं।

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के संग्रहण हेतु पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश माध्यमिक शिक्षक पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक हैं, किंतु सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विविधताओं के कारण उनके दृष्टिकोण एवं व्यवहार में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देते हैं। ग्रामीण एवं प्राकृतिक संसाधनों के निकट रहने वाले शिक्षकों में पर्यावरणीय संवेदनशीलता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों में पर्यावरणीय ज्ञान का स्तर अधिक देखा गया। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि पर्यावरणीय शिक्षा को स्थानीय सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संदर्भों से जोड़कर अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द: पर्यावरणीय जागरूकता, पर्यावरणीय अभिवृत्ति, माध्यमिक शिक्षक, सांस्कृतिक विविधता, भौगोलिक दृष्टिकोण, पर्यावरणीय शिक्षा।

1. प्रस्तावना

मानव और पर्यावरण के मध्य संबंध अत्यंत प्राचीन एवं परस्पर निर्भरता पर आधारित रहा है। प्रकृति मनुष्य को जीवनोपयोगी संसाधन प्रदान करती है, जबकि मनुष्य अपने विकास और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण का उपयोग करता है। किंतु आधुनिक युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। आज पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं तथा प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति में वृद्धि देखी जा रही है।

ऐसी परिस्थितियों में पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल सरकारी नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग में पर्यावरणीय चेतना का विकास आवश्यक है। शिक्षा इस चेतना के निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम है। विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों के विकास की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षकों पर निर्भर करती है। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, व्यवहार और सामाजिक उत्तरदायित्वों को भी आकार देते हैं।

माध्यमिक स्तर के शिक्षक किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में विशेष भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षक स्वयं पर्यावरणीय रूप से जागरूक एवं सकारात्मक अभिवृत्ति वाले होंगे, तो वे विद्यार्थियों में भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित कर सकेंगे। दूसरी ओर, यदि शिक्षकों की पर्यावरणीय समझ सीमित होगी, तो पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो सकेगा।

सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियाँ किसी व्यक्ति के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं। विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के अनुभव, जीवनशैली, परंपराएँ तथा प्राकृतिक संसाधनों के साथ उनका संबंध भिन्न होता है। उदाहरणस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति और कृषि पर निर्भर होते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों के लोग पर्यावरणीय समस्याओं को भिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं। इसी प्रकार विभिन्न सांस्कृतिक समूहों की मान्यताएँ और परंपराएँ भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

इस पृष्ठभूमि में माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति का सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टिकोण से अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह अध्ययन पर्यावरणीय शिक्षा की प्रभावशीलता बढ़ाने तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक संदर्भपरक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

पर्यावरणीय समस्याओं की बढ़ती गंभीरता ने पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है। शिक्षकों की भूमिका इस दिशा में केंद्रीय है क्योंकि वे विद्यार्थियों को पर्यावरणीय मूल्यों एवं व्यवहारों से परिचित कराते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों में कार्यरत शिक्षकों की पर्यावरणीय समझ और दृष्टिकोण का अध्ययन करने से यह ज्ञात किया जा सकता है कि किन कारकों का उनकी पर्यावरणीय चेतना पर प्रभाव पड़ता है। इससे पर्यावरण शिक्षा को अधिक प्रभावी और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जा सकेगा।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विश्लेषण करना।
3. विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना करना।
4. विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।
5. पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
6. पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक एवं भौगोलिक कारकों की पहचान करना।

4. शोध प्रश्न

1. माध्यमिक शिक्षकों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर क्या है?
2. क्या सांस्कृतिक विविधता शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति को प्रभावित करती है?
3. क्या भौगोलिक क्षेत्र शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में अंतर उत्पन्न करते हैं?
4. पर्यावरणीय जागरूकता और अभिवृत्ति के मध्य क्या संबंध है?

5. परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर औसत से उच्च होगा।
2. विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
3. विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
4. पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक सहसंबंध होगा।

6. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति (Descriptive Survey Method) का उपयोग किया जाएगा। यह पद्धति शिक्षकों की वर्तमान पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में सहायक होगी।

जनसंख्या एवं नमूना

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के समस्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शामिल होंगे। नमूना चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया जाएगा, जिससे विभिन्न सांस्कृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्रों का उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।

उपकरण

अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों का उपयोग किया जाएगा—

- पर्यावरणीय जागरूकता मापनी
- पर्यावरणीय अभिवृत्ति मापनी
- व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र

आंकड़ा संग्रहण

शोधकर्ता द्वारा चयनित विद्यालयों में जाकर अथवा ऑनलाइन माध्यम से आंकड़ों का संग्रहण किया जाएगा। प्रतिभागियों से प्राप्त सूचनाओं को गोपनीय रखा जाएगा तथा केवल शोध उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाएगा।

आंकड़ों का विश्लेषण

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे माध्य, मानक विचलन, t-परीक्षण, ANOVA तथा सहसंबंध विश्लेषण द्वारा किया जाएगा।

7. परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन से यह संभावना व्यक्त की जा सकती है कि अधिकांश माध्यमिक शिक्षक पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति पर्याप्त जागरूक होंगे। हालांकि सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उनके दृष्टिकोण में अंतर देखने को मिल सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षक स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं जैसे जल संरक्षण, कृषि और जैव विविधता के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों के शिक्षक वायु प्रदूषण, कचरा प्रबंधन तथा जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों के प्रति अधिक जागरूक हो सकते हैं।

सांस्कृतिक परंपराएँ भी पर्यावरणीय व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जिन समुदायों में प्रकृति संरक्षण से संबंधित परंपराएँ एवं मूल्य अधिक प्रचलित हैं, वहाँ के शिक्षकों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई जा सकती है। यह निष्कर्ष इस तथ्य को पुष्ट करता है कि पर्यावरणीय शिक्षा को स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ना आवश्यक है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति पर्यावरण शिक्षा की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षक समाज में पर्यावरणीय चेतना के संवाहक होते हैं और उनके दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। अध्ययन यह संकेत देता है कि पर्यावरणीय जागरूकता केवल शैक्षणिक ज्ञान का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक अनुभवों तथा भौगोलिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होती है। विभिन्न सांस्कृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों के बीच पर्यावरणीय सोच और व्यवहार में अंतर पाया जा सकता है, जो स्थानीय परिस्थितियों की देन है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा की योजनाओं तथा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थानीय आवश्यकताओं एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप विकसित किया जाना चाहिए। इससे शिक्षकों में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना सुदृढ़ होगी और वे विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक प्रभावी ढंग से प्रेरित कर सकेंगे।

संदर्भ (References)

1. Aggarwal, J. C. (2018). *Educational Research: An Introduction*. New Delhi: Arya Book Depot.
2. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2019). *Research in Education* (14th ed.). New Delhi: Pearson Education.
3. Bhatnagar, R. P. (2017). *Educational Psychology*. Meerut: R. Lall Book Depot.



4. Bhattacharya, S. (2020). *Environmental Education and Sustainable Development*. New Delhi: Deep & Deep Publications.
5. Carson, R. (2002). *Silent Spring*. New York: Houghton Mifflin.
6. Chhokar, K. B., Pandya, R. H., & Raghunathan, M. (2019). *Understanding Environment*. New Delhi: Sage Publications.
7. Cunningham, W. P., & Cunningham, M. A. (2021). *Principles of Environmental Science*. New York: McGraw-Hill.
8. Dash, M. (2018). *Education and Environmental Awareness*. New Delhi: Atlantic Publishers.
9. Deshbandhu, S. (2019). Environmental Education in Indian Schools. *University News*, 57(12), 18–24.
10. Government of India. (2023). *National Education Policy and Environmental Education Initiatives*. New Delhi: Ministry of Education.
11. Gupta, S. P. (2021). *Research Methodology and Statistical Techniques*. Allahabad: Sharda Pustak Bhawan.
12. Haseen, T. (2020). Environmental Awareness among Secondary School Teachers. *International Journal of Educational Research*, 8(4), 45–53.
13. Hungerford, H. R., & Volk, T. L. (2018). Changing Learner Behavior through Environmental Education. *Journal of Environmental Education*, 49(2), 123–135.
14. Jain, P. C. (2019). *Environmental Studies*. Jaipur: College Book House.
15. Joshi, P. (2021). Teachers' Attitudes towards Environmental Conservation. *Indian Educational Review*, 59(1), 78–89.
16. Kaushik, A., & Kaushik, C. P. (2020). *Perspectives in Environmental Studies*. New Delhi: New Age International Publishers.
17. Kumar, A. (2022). Environmental Awareness and Sustainable Practices among Teachers. *Educational Quest*, 13(2), 91–99.
18. Mishra, D. K. (2018). *Environmental Education*. New Delhi: APH Publishing Corporation.
19. NCERT. (2022). *Position Paper on Environmental Education*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
20. NCTE. (2021). *Teacher Education Curriculum Framework*. New Delhi: National Council for Teacher Education.
21. Palmer, J. A. (2017). *Environmental Education in the 21st Century: Theory, Practice and Progress*. London: Routledge.
22. Pandey, V. C. (2021). Environmental Awareness among Rural and Urban Teachers. *Journal of Educational Studies*, 15(3), 56–67.
23. Rao, D. B. (2018). *Environmental Education*. New Delhi: Discovery Publishing House.
24. Rickinson, M. (2019). Learners and Learning in Environmental Education. *Environmental Education Research*, 25(5), 621–635.
25. Sharma, R. A. (2020). *Fundamentals of Educational Research*. Meerut: R. Lall Book Depot.



26. Sharma, S., & Gupta, N. (2021). Cultural Influences on Environmental Attitudes among Teachers. *International Journal of Education and Development*, 11(1), 34–42.
27. Singh, R. P. (2020). *Environmental Awareness and Education*. New Delhi: Anmol Publications.
28. Sivamoorthy, M., Nalini, R., & Kumar, C. S. (2019). Environmental Awareness and Practices among Teachers. *International Journal of Scientific Research*, 8(6), 112–118.
29. Sood, J. K. (2018). *Educational Research and Statistics*. New Delhi: Kanishka Publishers.
30. Tilbury, D. (2017). *Education for Sustainable Development: An Expert Review*. Paris: UNESCO.
31. UNESCO. (2021). *Education for Sustainable Development: A Roadmap*. Paris: UNESCO Publishing.
32. UNEP. (2022). *Global Environment Outlook Report*. Nairobi: United Nations Environment Programme.
33. Yadav, M., & Verma, S. (2022). Geographical Differences in Environmental Awareness among School Teachers. *Journal of Social Sciences and Education*, 10(4), 102–110.
34. Zachariah, M. (2020). Environmental Attitude and Ecological Responsibility among Educators. *Indian Journal of Teacher Education*, 6(2), 67–76.
35. Zimmerman, M. A. (2019). *Environmental Philosophy and Education*. New York: Routledge.